हैं कि वैकुण्ठ-जगत् में सविशेषता नहीं हो सकती, क्योंकि ये दोनों परस्पर विरुद्ध हैं। वस्तुस्थिति यह है कि परव्योम में अप्राकृत देह मिलती है। वहाँ दिव्य क्रियाएँ भी होती हैं और इस दिव्य अवस्था को ही भक्तिमय जीवन कहा जाता है। वहाँ का परिमण्डल परम विशुद्ध है तथा चिद्गुणों की दृष्टि से जीव और परमेश्वर में वहाँ समानता है। ऐसे ज्ञान की उपलब्धि के लिए सब प्रकार के दैवी गुणों का विकास करना होगा। इस प्रकार के दैवी गुणों वाला पुरुष न तो प्राकृत-जगत् के सृजन से और न संहार से ही प्रभावित होता है।

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम्।
सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत।।३।।

मम=मेरी; **योनिः**=गर्भाधान का स्थान है; **महत् ब्रह्म**=महद्ब्रह्म नामक प्रकृति; **तस्मिन्**=उसमें; **गर्भम्**=चेतन जीवपुंज को; **दधामि**=स्थापित करता हूँ; **अहम्**=मैं; **सम्भवः**=उत्पत्ति; **सर्वभूतानाम्**=ब्रह्मा आदि सब जीवों की; **ततः**=उस प्रकृति और चेतन के संयोग से; **भवति**=होती है; **भारत**=हे अर्जुन।

अनुवाद

हे अर्जुन ! मेरी महद्ब्रह्म नामक प्रकृति सब प्राणियों की योनि है और मैं उसमें चेतन रूप जीवों का गर्भाधान करता हूँ। इस जड़-चेतन के संयोग से सब प्राणियों की उत्पत्ति होती है।।३।।

तात्पर्य

यह संसार किस कारण से है, इसका यहाँ वर्णन है। संसार में जो कुछ सृष्टि होती है, उसमें क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ, अर्थात् जड़ और चेतन का संयोग कारण है और यह संयोग कराते हैं स्वयं श्रीभगवान्। महत्तत्त्व सम्पूर्ण प्रपंच का कारण है। इसमें सत्त्व आदि तीन गुण हैं; इसलिए इसे 'ब्रह्म' भी कहा जाता है। श्रीभगवान इसी महत्तत्त्व में गर्भाधान करते हैं; इससे असंख्य ब्रह्माण्डों की उत्पत्ति होती है। महत्तत्त्व को वैदिक शास्त्रें में स्थान-स्थान पर 'ब्रह्म' कहा है, **तस्मादेतद्ब्रह्म नामरूपमन्नं च जायते।** उस ब्रह्मरूप प्रकृति में परमपुरुष श्रीभगवान् जीवरूप बीजों का गर्भाधान करते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि चौबीस तत्त्व महद्ब्रह्म नामक प्रकृति के अन्तर्गत ही हैं। जैसा सातवें अध्याय में उल्लेख है, इससे परे एक अन्य जीवरूपा परा प्रकृति भी है। श्रीभगवान् के संकल्प से अपरा और परा प्रकृति का संयोग होता है; तत्पश्चात् सब प्राणियों की प्रकृति से उत्पत्ति होती है।

बिच्छु अपने अण्डे धान के ढेर में देता है, जिससे कभी-कभी यह समझ लिया जाता है कि उसका जन्म धान से हुआ है। परन्तु यथार्थ में, धान बिच्छु के जन्म का कारण नहीं है, उसकी माँ धान में अण्डे देती है। इसी प्रकार, प्रकृति जीवों के जन्म का कारण नहीं है। वास्तव में उनका बीज श्रीभगवान् देते हैं; प्रकृति से तो वे केवल उत्पन्न होते दिखते हैं। जीवमात्र को पूर्वकर्म के अनुसार प्रकृति द्वारा रचित देह मिलती